जवाहर नवोदय विद्यालय[1] में सतत व समग्र आकलन

एम. वी. श्रीनिवासन

भारत में सुधार के प्रयासों के बावजूद शिक्षार्थियों के सीखने का आकलन बहुत बदला नहीं है। बच्चों की अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा के अधिकार कानून, 2009 (आरटीई) ने शिक्षार्थियों के सीखने के आकलन के कुछ प्रावधान किए हैं।[2]

नृशास्त्रीय विवरण[3] पर आधारित यह लेख सरकारी संगठन द्वारा चलाए जा रहे एक स्कूल- जिसे नवोदय विद्यालय समिति (आगे हम इसे एनवीएस कहेंगे) कहते हैं- में सतत आकलन की एक प्रक्रिया का खोजबीन करता है। जवाहर नवोदय विद्यालय (आगे से जेएनवी) की संबद्धता केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई)[4] से है और अपने सभी स्कूलों में यह सीबीएसई द्वारा दिए सतत एवं समग्र आकलन (सीसीई) का पालन करता है। मध्य प्रदेश में मेरे तीन महीनों के प्रवास (अगस्त से अक्टूबर) के आधार पर मैंने इस लेख में यह साबित किया है कि सीबीएसई द्वारा विकसित सीसीई पर जो सभी जेएनवी में लागू है- पुनर्विचार की सख्त जरूरत है।

इस लेख के चार खंड हैं। पहले दो खंडों में क्रमशः सीसीई और जेएनवी में स्कूली जीवन का परिचय दिया गया है। तीसरे खंड में, स्कूल में शिक्षार्थियों के सीखने को लेकर दो महत्त्वपूर्ण आयाम हैः-1. प्रश्नों और प्रश्न पत्रों का बनाना, और 2. परीक्षा में शिक्षार्थियों की जांच-परीक्षाओं में सहभागिता और प्रोजेक्ट पूरे करना व गतिविधियों पर चर्चा। अंतिम खंड में सारांश और पुनर्चिंतन (रिफ्लेक्शन) हैं।

1 सतत एवं समग्र आकलनः एक समीक्षा

सतत एवं समग्र आकलन दरअसल पारंपरिक परीक्षा के विकल्पों में एक है, जिसे एनसीईआरटी, नई दिल्ली ने 1960 के अंतिम और 1970 के दशक में राज्य-संचालित स्कूलों में विकसित और संचालित किया था

(श्रीवास्तव, 1978, श्रीवास्तव, 1979)। आकलन एक ऐसा शब्द है, जिसका मूल स्क्रिवेन (1967) के काम में तलाशा जा सकता है, जिसने अधिगम में पाठ्यचर्या विकास के प्रयासों का अध्ययन किया।

1990 तक कुछ ही राज्यों ने एनसीईआरटी के सीसीई ढांचे को अपनाया था। उदाहरण के लिए, राजस्थान वह पहला राज्य था जिसने 1969 में योजना का पायलेट प्रोजेक्ट चलाया था, उसके बाद तमिलनाडु ने इसे अपनाया (श्रीवास्तव, 1989)। विभिन्न शोध अध्ययनों में योजना के सकारात्मक प्रभावों को देखते हुए भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में भी प्रस्तुत किया (भारत सरकार, 1986, पृ. 24)। इसके बाद ही एनसीईआरटी ने भारत में स्कूलों को निर्देश देने के लिए कई दस्तावेज (एनसीईआरटी 1989, 1993 और राजपूत आदि, 2003) तैयार किए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ) 2005 ने भारत की स्कूली परीक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए कुछ सुधारों की शुरुआत की।[5] पहला, तो एनसीईआरटी ने प्राथमिक कक्षाओं के आकलन के लिए स्रोत-पुस्तिका प्रकाशित (एनसीईआरटी, 2006 इ) कर की। सीबीएसई ने 10वीं की बोर्ड परीक्षा को वैकल्पिक (एनसीईआरटी 2006 ब) बना दिया और सीसीई को लागू कियाः आकलन का ऐसा प्रारूप जिसमें 10वीं से 12वीं कक्षा में पढ़ने वाले शिक्षार्थियों का दो तरह का आकलन किया जाता है- रचनात्मक आकलन यानी फॉर्मेटिव असेसमेंट (एफए) और योगात्मक आकलन या समेटिव असेसमेंट (एसए)। आरटीई 2009 लागू होने के बाद, सीबीएसई ने सीसीई के कार्यान्वयन को संबद्ध स्कूलों में कक्षा छह से आठ तक बढ़ा दिया।[6] सीसीई पर निर्देशिकाओं की एक शृंखला छापी गई। बाद में, कई राज्यों ने पहली से आठवीं कक्षा क लिए सीसीई की शुरुआत की।

हालिया दिनों में, सीसीई के विविध आयामों पर जानकारों की नजर पड़ी है। सबसे अधिक निगाह सीबीएसई की उन निर्देशिकाओं पर रही है, जिनका इस्तेमाल स्कूलों और शिक्षकों द्वारा सीसीई के व्यवहार में होता है। रॉय (2011) ने पाया कि कई गतिविधियों के निर्देश की वजह से स्कूलों को शिक्षार्थियों को उनके कौशल और घिसे-पिटे सोपानक्रम (हाइरार्की) में डालना पड़ा। इन निर्देशिकाओं में समसामयिक सामाजिक मसलों जैसे लैंगिकता, पितृसत्ता, दलितों से जुड़े मसले वगैरह भी नहीं दिखे। छात्रों को सरकारी नीतियों की आलोचनात्मक समझ से दूर रखा गया है। एक संभावित खतरा है कि ये मैनुअल यथास्थितिवाद को बनाए रखें, न कि प्रश्न पूछने, बहस करने और तर्क करने का कौशल विकसित करें...(रॉय 2011, पृ. 24)। नवानी (2013) के मुताबिक सीसीई 'उन रास्तों को समझना है, जिसमें बच्चे स्कूल से संबंधित शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को समझते और उस पर चिंतन करते हैं' और सीबीएसई का मैनुअल एनसीएफ 2005 की भावना के खिलाफ है।

दूसरा अध्ययन बताता है कि सीसीई से ट्यूशन पढ़ने वाले शिक्षार्थियों की संख्या में कमी आई है और शिक्षकों की तुलना में शिक्षिकाएं, अत्यधिक दबाव के बावजूद सीसीई के कार्यान्वयन के प्रति सकारात्मक रुख रखती हैं (सिंह व सिंह, 2012)। हालांकि, स्कूलों में सीसीई के लागू होने पर बहुतेरे प्रकाशित शोध उपलब्ध नहीं हैं। यह लेख तथ्यों पर आधारित ऐसे ही नृशास्त्रीय विवरण को उपलब्ध कराने का प्रयास कराता है।

2 नारायणगढ़ जवाहर नवोदय विद्यालय में जीवन[7]: एक परिचय

हरेक जिले में जेएनवी की स्थापना के पीछे उद्देश्य सभी सुविधाओं के साथ ग्रामीण प्रतिभाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया कराना था।[8] यह स्कूल योजना के प्रथम वर्ष 1986 में ही खुला था। हरेक वर्ष लगभग 80 शिक्षार्थियों को छठी कक्षा में स्कूल द्वारा ली गई प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। लगभग 5000 छात्र इसके लिए परीक्षा देते हैं, इसलिए प्रतियोगिता जाहिर तौर पर कठिन होती है। जिले के ग्रामीण इलाके के छात्रों को 75 फीसदी आरक्षण मिलता है। गरीबी रेखा से ऊपर के बच्चों से जब वे नवीं कक्षा में जाते हैं तो थोड़ा शुल्क लिया जाता है। वैसे, यहां छठी से नवीं तक की मुफ्त शिक्षा और रहने की सुविधा है।

मेरी रिहाइश के दौरान यहां 540 शिक्षार्थी थे। उनमें से 40 फीसदी लड़कियां थीं। हरेक कक्षा में दो सेक्शन थे और दोनों में ही 35-40 शिक्षार्थी थे। सभी शिक्षार्थी, शिक्षक और कर्मचारी परिसर में ही रहते थे। शिक्षार्थियों को अलग-अलग हाउस में रखते हैं।

2.1 नारायणगढ़ जेएनवी में सतत व समग्र आकलन

नारायणगढ़ जेएनवी में 2009 से छठी से दसवीं कक्षा तक सीसीई का पालन होता आ रहा है (एनवीएस, 2012)। सीसीई के अंदर, स्कूलों में तीन तरह का आकलन किया जाता है:

1. रचनात्मक आकलन, जिसमें शामिल होते हैं अ) असाइनमेंट, ब) प्रोजेक्ट वर्क, स) गतिविधियां, द) सूचना प्रौद्योगिकी पर टिप्पणी व बहस, य) व्यवहारिक परीक्षा, र) गृहकार्य, कक्षाकार्य और कॉपी[9] का जमा करना, व) प्रयोगशाला गतिविधि, श) बहुविकल्पीय प्रश्न/क्विज/मौखिक परीक्षा, स) बातचीत का कौशल और ष) किताब पढ़ना।

2. बिना किताब वाली परीक्षा (जिसे पेन एंड पेपर टेस्ट), योगात्मक आकलन और बोर्ड परीक्षा कहते हैं।

3. सह-शैक्षणिक बातों की रिपोर्टिंग।

एफए परीक्षाओं की प्रकृति भी विषय के साथ बदलती रहती है। उदाहरण के लिए, विज्ञान विषयों में 'व्यवहारिक' अंश भी होता है, जबकि सामाजिक विज्ञान और भाषाओं में प्रोजेक्ट वर्क और बहस होते हैं।

सीसीई की हरेक गतिविधि एनवीएस के निर्देशों के तहत संचालित होती है, जो वह आदेश पत्रों (सर्कुलर) और प्रकाशनों के जरिए देता है। 'प्रारूप' में जब अंक भर दिए जाते हैं, स्कूल-प्रशासन इनकी सॉफ्ट कॉपी बना लेता है। किसी एक बच्चे ने अगर प्रोजेक्ट जमा नहीं किया है या गतिविधि में हिस्सा नहीं लिया है, तो शिक्षक उसे जमा करवाने की जिम्मेदारी लेता है। ये सभी प्रारूप पहले कक्षा-शिक्षक को जमा करवाए जाते हैं और फिर कक्षा-शिक्षक अलग विषयों के लिए उसकी कक्षा के सभी शिक्षार्थियों का कुल अंक जोड़ते हैं। आखिरकार, परीक्षा विभाग सभी कक्षाओं का अंकपत्र इकट्ठा करता है और उसे क्षेत्रीय कार्यालय, एनवीएस मुख्यालय या सीबीएसई में भेजा जाता है।

3 सीसीई प्रारूप में प्रश्न बनाना और प्रश्नावली तैयार करना

एनसीएफ 2005 की परीक्षा व्यवस्था में सुधार की एक अपेक्षा तो प्रश्नों को बदलने से थी। वह 'पाठ आधारित और क्विज के तरह के सवालों' से हटकर दूसरी व्यवस्था लाने की बात थी, जो केवल रटंत विद्या को ही प्रश्रय न दे। एफए के सवालों को संज्ञानात्मक होना था- शिक्षकों से अपेक्षा थी कि वह समझें कि किसको सीखने में दिक्कत हो रही है, साथ ही उन कारणों की पहचान कर 'सीखने में निपुणता' प्राप्त करने के उपाय करें (ब्लूम एवं अन्य, 1971)। इसके उलट, एसए की प्रश्नावली इस तरह की बनानी थी, जिससे सत्र के अंत में पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के बरक्स शिक्षार्थी की सफलता का पता चल सके।

इस स्कूल में, एफए के सवाल शिक्षक तैयार करते हैं और एसए के प्रश्न क्षेत्रीय कार्यालय से आते हैं। छठी कक्षा के लिए दोनों ही तरह के प्रश्नपत्र स्कूली शिक्षक ही तैयार करते हैं। शिक्षकों से अपेक्षा रहती है कि वे दोनों ही तरह के प्रश्नों का अंतर समझ सकें। मुझे दोनों ही में किसी तरह का अंतर इस स्कूल में नहीं दिखा।

'गणित के अनुभवी शिक्षक कुमार ने बताया कि एफए और एसए के प्रश्नपत्रों में किसी तरह का अंतर नहीं रहता है। जब भी किसी तरह का भ्रम होता है, शिक्षार्थी तुरंत ही पूछ लेते हैं और इस तरह शिक्षक को वापस वह पाठ नहीं दोहराना होता, जो पहले ही पढ़ाया और पूरा किया जा चुका हो। स्कूली व्यवस्था में शिक्षकों को दिए काम को देखते हुए भी, यह कहा जा सकता है कि पढ़ाए गए पाठ पर चिंतन और सुधार का वक्त ही शिक्षक के पास कहां है?'

चकमक अप्रैल, 2015 अंक से साभार

सीबीएसई, एनवीएस मुख्यालय और क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा भेजे गए बोर्ड के प्रश्नपत्र और समेकित आकलन हिंदी और अंग्रेजी, दोनों भाषा में होते हैं। जेएनवी के शिक्षकों के लिए एफए प्रश्नपत्रों को द्विभाषी प्रारूप में तैयार करना बड़ी चुनौती है। विज्ञान और गणित के शिक्षक प्रश्नपत्र अंग्रेजी में तैयार करते हैं, जबकि सामाजिक विज्ञान के प्रश्नपत्रों को दोनों भाषा में होना चाहिए, क्योंकि अधिकतर शिक्षार्थी अपनी परीक्षा हिंदी में देते हैं। स्कूल में कोई हिंदी टाइपिस्ट नहीं है। एकमात्र कर्मचारी जो हिंदी में टाइपिंग कर सकता है, वह भी दूसरे प्रशासनिक कामों में उलझा रहता है। यह प्रश्नपत्रों और प्रश्न की गुणवत्ता को प्रभावित करता है और प्रश्न तैयार करने में शिक्षक के उत्साह को भी दबाता है।

'जब मैं कक्षा छह से आठ तक को सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक रवि से मिलने गया, तो वह हिंदी में प्रश्नपत्र तैयार कर रहे थे। वह इतिहास में एमए हैं। जितने भी सवाल रवि ने तैयार किए हैं, वे रटन्त आधारित सवाल ही हैं। मैंने उनको हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद में मदद की और मैंने पाया कि यह एक कठिन काम था। रवि एक उत्साही शिक्षक हैं। स्थायी शिक्षकों ने जहां 2, 3 और 4 अंक के प्रश्न तैयार किए, रवि ने बहुविकल्पीय प्रश्नों को तवज्जो दी। उन्होंने तीन विकल्पों वाले प्रश्नों के साथ प्रश्नपत्र तैयार किया। मैंने उनको चार विकल्प देने को कहा, जिस पर उनका जवाब था कि तीन विकल्पों में आसानी होती है। उन्होंने कहा कि सीसीई के साथ काम करने में शिक्षार्थियों को दिक्कत हो रही है- कई सारे प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, हरेक विषय की गतिविधि से बच्चे सचमुच थक जाते हैं। उनको कुछ आसान सवाल दिए जाने चाहिएं, ताकि वे परीक्षा को आसानी से दे सकें। वे चाहते हैं कि उन सवालों का अंग्रेजी में अनुवाद कर सकें, जिसे उन्होंने हिंदी माध्यम की 'संदर्भ-पुस्तिका' (निजी संपादन समूहों द्वारा प्रकाशित किताबें, जिसमें केवल प्रश्नोत्तर हैं) से लिया है।'

एक और मौके पर रवि ने कहा कि उन्होंने एफए 2 के प्रश्नपत्र संदर्भ-पुस्तिका से ही उठा लिए, क्योंकि उनके पास समय की कमी थी। जब बाजार में इतनी संदर्भ-पुस्तिकाएं उपलब्ध हों और जेएनवी का शिक्षक काम के बोझ के तले दबा हो, तो वह पगडंडी तलाशेगा ही।

प्रश्नपत्र जमा करने की आखिरी तारीख के समय रवि को कोई और जिम्मेदारी जैसे, दूसरे जेएनवी में खेल-प्रतियोगिता में बच्चों को ले जाने की- दे दी गई। उनके पास जाहिर तौर पर कोई उपाय बचा नहीं था।

सीबीएसई (2010) ने सीसीई को यही सोच कर लागू किया था कि आकलन सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का आंतरिक हिस्सा बन जाएगा। हालांकि, कई सारे एफए और एसए परीक्षा के बाद भी, शिक्षकों को इन दोनों ही के प्रश्नपत्रों में अंतर के बारे में बेहद कम पता था। शिक्षकों ने एफए को परीक्षाओं की एक शृंखला के तौर पर ले लिया, न कि उनकी अपनी शिक्षण की समझ के स्रोत और शिक्षार्थियों के सीखने में दिक्कत तलाशने के तौर पर। साथ ही वे अब भी महसूस करते हैं कि सुधार के जो भी उपाय करने हैं, वह तुरंत ही कर दें, एफए परीक्षा का इंतजार न करें।

3.1 रचनात्मक आकलन की गतिविधियां

छठी से नवीं कक्षा तक के नारायणगढ़ जेएनवी के हरेक शिक्षार्थी को एक वर्ष में चार रचनात्मक आकलनों को करना होता है। हरेक विषय में, एक एफए परीक्षा होती है- पहले वाली एक इकाई परीक्षा, और तीन-चार परीक्षा के बिना

वाली गतिविधियां। शिक्षार्थियों को इकाई परीक्षा (यूनिट टेस्ट) देनी होती है, प्रोजेक्ट देने पड़ते हैं और शिक्षकों द्वारा सुझाई गतिविधियों को करना पड़ता है।

3.2 गणित में प्रोजेक्ट करना

गणित के हरेक एफए में एक परीक्षा और चार बिना परीक्षा वाले असाइनमेंट होते हैं। संध्या रानी कक्षा छह से 10 तक गणित की वरिष्ठ अध्यापिका हैं। उन्होंने हमें शिक्षार्थियों को दिए प्रोजेक्ट और गतिविधियों की सूची दी। उन्होंने कहा कि वह उन प्रोजेक्ट या नमूनों (लकड़ी से बने) में फर्क कर सकती है, जो छात्रों ने खुद बनाए होते हैं या उन्होंने अभिभावकों, बढ़ई या दुकान से खरीदे होते हैं। उन्होंने महसूस किया कि एफए में गणित के लिए पांचों (कॉपी या गृहकार्य और पेन-पेपर टेस्ट के साथ) गतिविधियों की जरूरत होती है।

3.3 सामाजिक विज्ञान के प्रोजेक्ट

जब मैंने सामाजिक विज्ञान में सीसीई के बारे में बात शुरू की, उन्होंने बताया कि किस तरह सामाजिक विज्ञान पढ़ाने वाले एक शिक्षक ने एफए गतिविधियों को संचालित किया। मैंने दसवीं कक्षा के छात्रों से बात की, जो नीचे दी गई है:

पिछले वर्ष श्रीमती पुष्पा ने आपको सामाजिक विज्ञान पढ़ाया था। उन्होंने क्या किया?

पहला छात्र: *जब वह पढ़ा रही थीं, हम गृहकार्य की कॉपी रखते थे, उसी में नोट्स लेते थे और प्रश्नोत्तर लिखते थे। कक्षा की गतिविधियों से हमें एफए 1 और एफए 2 के लिए अंक[10] मिलते थे। अंक कक्षा की गतिविधियों के आधार पर दिए जाते थे। हमने एक प्रोजेक्ट और असाइनमेंट किया था, जिसे हमने कक्षा चलने के दौरान ही किया था। सामाजिक विज्ञान में केवल तीन गतिविधियां थीं। जब भी मानचित्र से संबंधित या कोई और गतिविधि होती थी, काम समूह में होता था। कक्षा के दौरान बातचीत होती थी, वह हमें कुछ बताती थीं, अंक देती थीं और कक्षा खत्म हो जाती थी।*

दूसरा शिक्षार्थी: *पुष्पा मैडम अच्छे से काम करवाती थीं। अभी जो शिक्षक पढ़ाते हैं, वह नहीं कर पाते हैं (अचानक ही शिक्षार्थी रुकता है और फिर बोलता है)। वह हमें समय से असाइनमेंट और काम देती थीं। दूसरे अधिकतर शिक्षक ऐसा नहीं करते हैं। पुष्पा मैडम किसी भी विषय पर हम क्या सोचते हैं- प्रोजेक्ट करने देती थीं।'*

बाद में मुझे पता चला कि पुष्पा उप-प्रधानाध्यापिका बन गई हैं और दूसरे स्कूल चली गई हैं। पुष्पा के प्रयास उसकी अपनी समझ का नतीजा थे, न कि एनजेएनवी द्वारा दिए गए प्रारूपों का नतीजा।

भारत में सामाजिक विज्ञान के अधिकांश शिक्षकों ने चार (इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र) में से केवल दो विषय पढ़े होते हैं। मैंने यह भी देखा कि सामाजिक विज्ञान के एक वरिष्ठ शिक्षक ने अपने स्कूल में वही प्रोजेक्ट शिक्षार्थियों को दिए, जो उन्होंने खुद स्नातक में पढ़े थे, यानी इतिहास और भूगोल से।

इससे मुझे पता चला कि एनजेएनवी के शिक्षार्थियों को क्यों बाकी तीन विषयों में गतिविधि का मौका नहीं मिला। शिक्षक एनसीईआरटी की किताबों में दिए गए प्रोजेक्ट और गतिविधियां भी नहीं सुझाते हैं, हालांकि शिक्षार्थी अधिकतर उन्हीं को पढ़ते हैं। यह बताता है कि सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में जो भी नवाचार हो रहा है, वह कक्षा में व्यवहार में लाया ही जाए, यह तयशुदा नहीं है।

3.4 विज्ञान की गतिविधि को करना

मैंने पाया कि कई शिक्षार्थी फ्लेक्स बोर्ड पर अपने विज्ञान के प्रोजेक्ट जमा कराते हैं। वे नवाचारी मॉडल और प्रयोग भी दिखाते हैं। मैंने एक दिन नवीं और दसवीं के शिक्षार्थियों से बात की। उनसे एफए और एसए के बारे में चर्चा हुई।

पहला शिक्षार्थीः *यदि विज्ञान का प्रोजेक्ट है तो हमें 10 अंक के लिए 300-400 रुपये के तीन फ्लेक्स बोर्ड खरीदने पड़ते हैं। आठवीं कक्षा तक केवल एक विज्ञान शिक्षक है। वे केवल एक असाइनमेंट देती थीं। अब नवीं और दसवीं कक्षा में तीन-तीन शिक्षक हैं। सभी तीनों शिक्षक तीन असाइनमेंट और प्रोजेक्ट अलग-अलग देते हैं। एक पेपर के लिए हमें एफए के तौर पर तीन प्रोजेक्ट करने होते हैं। 5-6 अंक पाने के लिए हमें लगभग 800 रुपए खर्च करने होते हैं। शिक्षक हमें विज्ञान में अच्छा प्रोजेक्ट करने को कहते हैं और तब भी हम केवल 3-4 अंक या ए ग्रेड पाते हैं।*

दूसरा छात्रः *हम तीन प्रोजेक्ट करते हैं और अगर किसी एक में छोटी-सी गलती हो जाए तो एक अंक काट लिया जाता है और हमें केवल 9 अंक मिलते हैं। 800 रुपए के लिए हम केवल 9 अंक पाते हैं। अगर हम कुछ भी नहीं करते हैं, तो भी हमें 1 अंक मिलता है, क्योंकि शून्य दिया नहीं जा सकता है। इसके बाद हमें कुछ और करने को कहा जाता है, जिसे हम जमा कर सकें।*

तीसरा छात्रः *यह समस्या रसायनशास्त्र में गंभीर है, जिसमें रसायनों की जरूरत होती है। रसायन यहां उपलब्ध नहीं हैं। वे बड़े शहरों और कस्बों में मिलते हैं। वे गांव में कैसे उपलब्ध होंगे?*

दूसरा छात्रः *विज्ञान शिक्षक जितना दबाव देते हैं, वह बहुत अधिक है। पिछली परीक्षा के दौरान हमें विज्ञान की परीक्षा के पहले केवल दो दिन मिले थे। भौतिकी के शिक्षक ने इन दोनों ही दिन 7 घंटे की कक्षा ली थी और बाकी विषयों को बाद में पढ़ने कहा था। कक्षा के बाद उन्होंने कहा कि एक दिन के 17 घंटों में भौतिकी 5 घंटों तक पढ़ें। एक विषय के लिखित असाइनमेंट पूरे करने के लिए एक शिक्षक ने राय दी कि हम रोज उसका एक पृष्ठ लिखें, ताकि एक महीने की छुट्टी के दौरान हम वह प्रोजेक्ट पूरा कर सकें। हालांकि, हमें और विषयों का भी सोचना है।*

तीसरा छात्रः *जब एक शिक्षक ने शिक्षार्थियों को फ्लेक्स बोर्ड का इस्तेमाल करने को कहा, तो दूसरे शिक्षक ने भी प्रोजेक्ट के लिए फ्लेक्स बोर्ड का ही इस्तेमाल करने को कहा। हमारे स्कूल में तीनों विज्ञान शिक्षक एक-दूसरे से हमेशा लड़ते रहते हैं। उनकी लड़ाई की वजह से हम झेलते हैं।*

एक बार, गणित के शिक्षक ने हमें असाइनमेंट दिया और कहा कि अगले दिन इसे जमा कराना है। हम वैसा कर नहीं पाए। अगले दिन, जब हम उनकी कक्षा में गए, तो शिक्षक ने कहा कि जब तुम दूसरे विषयों का काम समय पर कर सकते हो तो मेरा प्रोजेक्ट क्यों नहीं कर पाए?

पहला छात्रः *सीसीई के आने के बाद, शिक्षक हमें कहते हैं कि वे किसी भी तरह हमें उत्तीर्ण कर ही देने वाले हैं। हालांकि, हमारी उंगलियों को देखिए। हरेक दिन हमें 12 बजे रात तक लिखना पड़ता है, अगले दिन जब हम कक्षा में जाते हैं, तो समझ नहीं पाते कि कक्षा में चल क्या रहा है?*

विज्ञान के प्रयोग और प्रोजेक्ट वैज्ञानिक सोच को विकसित करने, छात्रों की उत्सुकता को बढ़ाने और स्कूली स्तर पर युवा वैज्ञानिक बनने में मदद करने की सोच के साथ शुरू किए गए। सीसीई प्रोजेक्ट, इसके ठीक उलट शिक्षार्थियों को इसके आर्थिक आयाम सोचने को बाध्य करता है। वे इनको करने में मशीनी बन जाते हैं। शिक्षार्थियों के विचार बताते हैं कि शिक्षक किस तरह सीसीई के मार्फत अपनी स्थिति का नाजायज फायदा उठाते हैं।

3.5 भाषाओं के प्रोजेक्ट करना

सीसीई में शिक्षकों को विभिन्न विषयों में शिक्षार्थियों को चार बार प्रोजेक्ट और असाइनमेंट देना होता है। सभी शिक्षक रचनात्मक तौर पर नहीं सोच पाते ताकि शिक्षार्थियों को प्रोजेक्ट और असाइनमेंट दे सकें। यह स्कूल में इस्तेमाल पाठ्यपुस्तकों पर भी निर्भर करता है। छठी से नवीं कक्षा को अंग्रेजी पढ़ाने वाले चंदू कहते हैं:

'मैं शिक्षार्थियों को प्रोजेक्ट देने लायक भी नहीं हूं। जब मैं कक्षा में पढ़ाता हूं, तो शिक्षार्थी कक्षा की गतिविधियों में हिस्सा नहीं ले पाते हैं। वे तो कक्षा में पढ़ाई बातों को कहानियों की तरह सुनते हैं। इस स्कूल में इस्तेमाल होने वाली एनसीईआरटी की तमाम किताबें ऊंचे स्तर की हैं, जो अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए हैं। जब हम पढ़ाना शुरू करते हैं, वे बोरियत में सो जाते हैं।

35 में से केवल 5 (अधिकतम 10) शिक्षार्थी ही कक्षा में सक्रियता दिखाते हैं। जब उनको मजबूर करो, तो वे जवाब देते हैं। मैं शिक्षार्थियों को सीसीई से जुड़ी गतिविधि करने को प्रोत्साहित करता हूं, ताकि वे समझ सकें कि क्या हो रहा है। मैं चिट्ठियां लिखता हूं, ब्लैकबोर्ड पर आवेदन पत्र भरता हूं और शिक्षार्थी उसे ही प्रोजेक्ट की तरह जमा कर देते हैं। जो सही ढंग से नकल कर पाते हैं, उन्हें दूसरों से अधिक अंक मिलते हैं। बाकी अधिकांश मौकों पर, शिक्षार्थी दूसरों का असाइनमेंट नकल कर जमा करा देते हैं। इसी वजह से उन्हें 50 में केवल 13-14 अंक मिलते हैं। कुछ वरिष्ठ छात्र पुस्तकालय की किताबों और अखबारों से नकल कर लेख लिखते हैं। एनसीईआरटी की किताबों में चूंकि कोई व्याकरण नहीं है, सब कुछ बिखरा-बिखरा सा लगता है।'

हिंदी के छात्रों के लिए गतिविधियां खोजना भी एक टेढ़ा काम है। 20 वर्षों से अधिक समय से हिंदी पढ़ा रही एक शिक्षिका कुमारी ने कहा कि एनसीईआरटी के दूसरे किताबों के उलट, हिंदी की पाठ्यपुस्तकें उदाहरणार्थ प्रोजेक्ट या गतिविधि का उल्लेख नहीं करतीं। हिंदी भाषा की एक और शिक्षिका मल्लिका ने कहा कि हिंदी में एफए की गतिविधियों का हिंदी की पाठ्यपुस्तकों से कोई संबंध नहीं है।

4. निष्कर्ष

किसी भी स्कूल का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण तरीके से सीखने का अनुभव प्रदान करना है, और जेएनवी इस उद्देश्य को प्राप्त करने की बेहतर तरीके से कोशिश करता है। सीसीई प्रारूप में स्कूलों को वृहत्तर स्वायत्तता दी गई है, ताकि स्कूल आधारित आकलन भारत में एक वास्तविकता बन सके (एनसीईआरटी 2006 स)। दरअसल, एनसीएफ 2005, तो यशपाल समिति रिपोर्ट (बिना बोझ के सीखना) से ही शुरुआत करता है। इस रिपोर्ट की एक प्रमुख चिंता परीक्षा मात्र के लिए पढ़ने और परीक्षाओं के दुष्परिणाम पर थे। स्कूल में सीसीई के कार्यान्वयन के नाम पर मैंने पाया कि एनसीएफ 2005 की परिकल्पना के ठीक उलट ही सतत आकलन हो रहा है। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही, सीबीएसई-सीसीई के राज में ऊब चुके हैं, जिसमें प्रिंसिपल और दूसरे अधिकारी उनके लिए फैसले लेते हैं। इस हालात के लिए जिम्मेदार दरअसल, योजना के स्तर पर ही सीसीई के कार्यान्वयन में शामिल तीनों महत्त्वपूर्ण संगठनों-एनसीईआरटी, सीबीएसई और एनवीएस- के बीच खाई को ठहरा सकते हैं।

एनजेएनवी में सीसीई का एक बड़ा प्रभाव तो शिक्षण के मूल्यवान घंटों पर पड़ा है। सीसीई की वजह से शिक्षकों का काफी समय अंकों को रिकॉर्ड करने, उन्हें ग्रेड में बदलने, प्रारूप को भरने और फिर कंप्यूटर में उनको संकलित करने आदि में चला जाता है। वे न तो वैचारिक विषयों की व्याख्या का समय पाते हैं, न ही जरूरतमंद छात्रों के लिए सुधार के उपाय सुझा पाते हैं। शिक्षक भी शिक्षार्थियों की तरह ही सीसीई से डरे हुए हैं। ◆

भाषान्तर : व्यालोक

संदर्भः

1. इस लेख में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं और वे संगठन की सोच को अभिव्यक्त नहीं करते, जिससे वह जुड़ा है। इस लेख का विस्तृत रूप अंग्रेजी में कंटेंपररी एज्युकेशन डायलॉग (श्रीनिवासन, 2015) में छप चुका है।
2. आरटीई, 2009 के पांचवें अध्याय के मुताबिक पाठ्यचर्या और आकलन की प्रक्रिया होनी चाहिएः (क) भारतीय संविधान में निहित मूल्यों की पुष्टि, (ख) शिक्षार्थी का पूरी तरह से (ऑलराउंड) विकास, (ग) शिक्षार्थी के ज्ञानार्जन की संभावना और प्रतिभा का निर्माण, (घ) शिक्षार्थी की शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का पूरी हद तक विकास, (च) बाल-केंद्रित और बाल-सुलभ वातावरण में गतिविधियों, खोजों और अन्वेषण के जरिए सीखना, (छ) *शिक्षार्थी को भय, बेचैनी और घबराहट से मुक्त कर, उसे आजादी से विचार व्यक्त करने में सहायता देना, (ज) बच्चे के ज्ञान की समझ और उसके प्रयोग की क्षमता (बल दिया गया है) का सतत और समग्र आकलन।*
3. देखें, जॉर्ज, 2005; सारंगपाणि, 2003 अ और 2003 ब, तपन, 2006- भारत में स्कूलिंग के हालिया नृशास्त्रीय (एथनोग्राफिक) विवरण के लिए। साथ ही, नृशास्त्रीय विवरण पर लेखन-कला की आधारभूत जानकारी के लिए एमर्सन, आर. 1995 भी देखें।
4. सीबीएसई सबसे पुराने परीक्षा बोर्ड में से एक है, जो भारत में लगभग 15,000 सरकारी और निजी स्कूलों में (कई और देशों में भी) संबद्धता के जरिए काम करता है।
5. भारत में स्कूलिंग से संबंधित मसलों के व्यवस्थागत मुद्दे और पाठ्यचर्या विकास के लिए एनसीएफ 2005 एक निर्देशक नीतिगत दस्तावेज है। इसने स्कूलों में परीक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए कई उपाय सुझाए हैं। देखें, एनसीईआरटी 2005
6. सीबीएसई के विभिन्न दस्तावेजों के मुताबिक सीसीई का उद्देश्य हैः (1) संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक कौशल विकसित करने में सहायता, (2) विचार प्रक्रिया पर जोर और रटंत विद्या की अनदेखी, (3) आकलन का इस्तेमाल शिक्षार्थियों के सीखने और उपलब्धि को बढ़ाने में- सीखने की रणनीति नियमित आधार पर लक्षणों को पहचानकर और सुधारात्मक उपाय अपनाकर हो, (4) आकलन का इस्तेमाल गुणवत्ता को नियंत्रित करने के औजार के रूप में करें, ताकि प्रदर्शन का वांछनीय स्तर पा सकें, (5) किसी कार्यक्रम के सामाजिक उपयोग, वांछनीयता और प्रभाविता को आंकना और शिक्षार्थी, शिक्षण-प्रक्रिया व शिक्षण के वातावरण के बारे में उचित निर्णय लेना, (6) शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को शिक्षार्थी-केन्द्रित गतिविधि बनाना (देखें सीबीएसई, 2010)
7. स्कूल का नाम, ठिकाना, शिक्षकों और शिक्षार्थियों के नाम गोपनीयता बरतने के लिए बदल दिए गए हैं।
8. जेएनवी पर हालिया शोध के लिए देखें खापरदे एवं अन्य 2004।
9. वैसे नोटबुक, जिनमें शिक्षार्थी पाठ्यपुस्तकों में दिए सवाल या शिक्षकों के पूछे सवाल, उत्तर सहित लिखते हैं, उन्हें कहते हैं। ये जवाब शिक्षकों द्वारा बोलकर लिखाए जाते हैं या शिक्षार्थी खुद ही पाठ्यपुस्तकों और संदर्भ-पुस्तकों के आधार पर लिखते हैं।
10. इस इलाके के शिक्षार्थी और अभिभावक परीक्षा में पाए अंकों के लिए इस शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं।

लेखक परिचयः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के शिक्षा विभाग के समाज विज्ञान में फेकल्टी सदस्य हैं। समाज विज्ञान के पाठ्यक्रम, पाठयपुस्तकों एवं सहायक सामग्री बनाने के लिए कॉलेज और विश्वविद्यालय में कार्यरत अध्यापकों के साथ कार्य करते हैं। पाठ्यचर्या के विभिन्न मुद्दों पर शोध कार्य करते हैं।

आभारः मैं एकलव्य, होशंगाबाद के हमारे मित्र सी. एन. सुब्रह्मण्यम तथा अलेक्स एम. जॉर्ज का इस लेख को लिखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए शुक्रिया अदा करता हूं।